श्री मुख वाणी गायन

अंदर नाहीं निरमल

अंदर नाहीं निरमल, फेर फेर नहावे बाहेर।
कर देखाई कोट बेर, तोहे ना मिलो करतार।।

कोट करो बंदगी, बाहेर हो निरमल।
तोलों ना पिउ पाइए, जोलों ना साधे दिल।।

अहनिस तूं भेली रहे, अपने पिउ के संग।
पीठ दे तिन पिउ को, करे ऊपर के रंग।।

जैसा बाहेर होत है, जो होए ऐसा दिल।
तो अधखिन पिउ न्यारा नहीं, मांहें रहे हिल मिल।।

तूं आपे न्यारी होत है, पिउ नहीं तुझ से दूर।
परदा तू ही करत है, अंतर न आड़े नूर।।